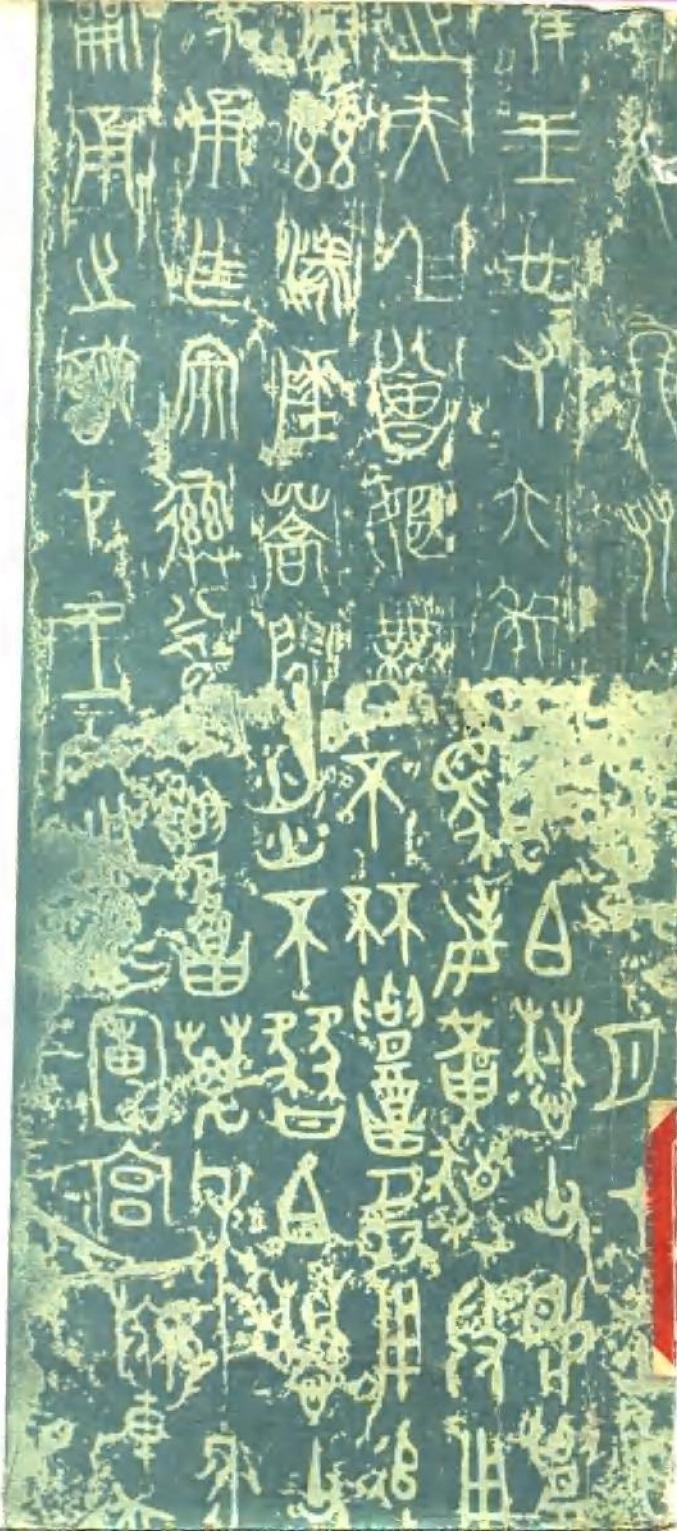


唐氏文選



上册

唐宋詩文選

上海书画出版社

装帧设计：周萍  
(书名系集唐孙过庭《书谱》字)

### 历代书法论文选

---

上海书画出版社出版 (上海衡山路237号)

新华书店上海发行所发行 上海市印刷三厂印刷

开本 850×1168 1/32 印张 33

插页 4 字数 600,000

1979年10月第一版 1981年10月第二次印刷

印数 8,000—19,000

---

书号：7172·123

定价：(平装)3.00元(精装)4.20元

下册

李氏古法之文選

上海书画出版社

本 书 由  
上 海 书 画 出 版 社  
华东师范大学古籍整理研究室  
选 编 校 点  
责 任 编 辑 黄 简

## 出版说明

我国的书法艺术，起源极早，自秦、汉以后，逐渐成为一门专业。嗣后研究书法的文章也渐有问世，或总结书写经验，或著录书家名作，或探讨用笔技巧，或考证碑帖迁流，后世称为「书学」。整理、研究这一份宝贵的文化遗产，无疑是十分必要的。因此，我们搜集整理了历代著名书法论文六十九家九十五篇，汇成一帙，以供书法工作者和爱好者参考。

历代书学专著汗牛充栋，此次选编，仅限于专论书法技巧与书法历史的部分。从文体上说，着重论文一体，偶及价值较高的题跋、书启等片断。照此原则，仍感篇幅不够，不能全部选入。它如论述书家、文房四宝、碑帖、收藏等内容的文章及诗歌、口诀、书信等等，均不录，将来另编。本书中有些论文，如卫夫人、王羲之等人的作品，早被人指出系附名之伪作，但考虑到这些作品的影响很大，本身又具有一定的学术价值，故仍选入，但在每人的题解中予以指明。

本书按作者生卒年代的前后次序编成，从汉赵壹开始到清康有为止。通过这个顺序，读者易于了解我国书学的发展过程。书后附有《人名索引》，以供查阅。

书学专著近几十年来鲜有重版，历代善本更属凤毛麟角，故收集版本甚为困难。校点时，我们曾尽可能地搜集了各种版本，仍感依据不足。常有一篇文字诸本出入甚多的情况，各有千秋，难以取决，至于一、二字的差别，更是举不胜举。因此，这次校点原则是：舛错者据它本改之，两可者择善从之，两皆善者据多本改之，唯无本可据者存之，不妄改。这样，书中个别地方留有文义不通、不可句读和明显脱漏处，皆因无本可据，以俟将来。同时，此次校勘记录繁多，为篇幅计，决定不附校勘记了。每位作者的名下，由参加校点的同志写一简要题解，介绍作者生平、论文内容及版本情况。

华东师范大学古籍整理研究室的徐震堧、程俊英、段飏、叶百丰、朱菊如、王义耀、周子美、胡邦彦、林艾园、李德清、郑明、李似珍、袁桦、陈晓芬十四位同志参加了本书的校点工作。

编 者

一九七九年三月

本 书 由

上海书画出版社  
华东师范大学古籍整理研究室

选编 校点

责任编辑 黄 简

# 目 录

|      |      |
|------|------|
| 赵壹   | (一)  |
| 非草书  | (一)  |
| 蔡邕   | (五)  |
| 笔论   | (五)  |
| 九势   | (六)  |
| 成公绥  | (九)  |
| 隶书体  | (九)  |
| 卫恒   | (二)  |
| 四体书势 | (二)  |
| 索靖   | (一九) |
| 草书势  | (一九) |
| 卫铄   | (三)  |

---

|            |      |
|------------|------|
| 王羲之        | (三)  |
| 题卫夫人《笔阵图》后 | (三六) |
| 书论         | (三八) |
| 笔势论十二章并序   | (三九) |
| 用笔赋        | (三九) |
| 记白云先生书诀    | (三七) |
| 王愔         | (三九) |
| 古今文字志目     | (三九) |
| 羊欣         | (三三) |
| 采古来能书人名    | (三四) |
| 虞龢         | (四九) |

|          |      |         |       |
|----------|------|---------|-------|
| 论书表      | (四九) | 古今书人优劣评 | (八一)  |
| 王僧虔      | (五七) | 庾肩吾     | (八五)  |
| 论书       | (五七) | 书品      | (八五)  |
| 笔意赞      | (六三) | 释智果     | (九三)  |
| 江式       | (六三) | 心成颂     | (九三)  |
| 论书表      | (六三) | 欧阳询     | (九七)  |
| 陶弘景      | (六九) | 八诀      | (九八)  |
| 与梁武帝论书启  | (六九) | 三十六法    | (九九)  |
| 论书启      | (七二) | 传授诀     | (一〇五) |
| 袁昂       | (七三) | 用笔论     | (一〇五) |
| 古今书评     | (七三) | 虞世南     | (一〇九) |
| 萧衍       | (七七) | 笔髓论     | (一一〇) |
| 观钟繇书法十二意 | (七八) | 书旨述     | (一一五) |
| 草书状      | (七九) | 李世民     | (一一七) |
| 答陶隐居论书   | (八〇) | 笔法诀     | (一一七) |

|       |       |       |
|-------|-------|-------|
| 论书    | ..... | (110) |
| 指意    | ..... | (110) |
| 王羲之传论 | ..... | (111) |
| 孙过庭   | ..... | (112) |
| 书谱    | ..... | (113) |
| 李嗣真   | ..... | (114) |
| 书后品   | ..... | (115) |
| 张怀瓘   | ..... | (116) |
| 书议    | ..... | (117) |
| 书估    | ..... | (118) |
| 书断    | ..... | (119) |
| 文字论   | ..... | (120) |
| 六体书论  | ..... | (121) |
| 论用笔十法 | ..... | (122) |
| 玉堂禁经  | ..... | (123) |

---

|           |       |       |       |
|-----------|-------|-------|-------|
| 窦         | 评书药石论 | ..... | (138) |
| 窦         | 息     | ..... | (139) |
| 窦         | 述书赋   | ..... | (140) |
| 窦         | 蒙     | ..... | (141) |
| 《述书赋》注    | ..... | (142) |       |
| 《述书赋》语例字格 | ..... | (143) |       |
| 蔡希综       | ..... | (144) |       |
| 徐浩        | 法书论   | ..... | (145) |
| 徐浩        | 论书    | ..... | (146) |
| 颜真卿       | ..... | (147) |       |
| 述张长史笔法十二意 | ..... | (148) |       |
| 李华        | ..... | (149) |       |
| 二字诀       | ..... | (150) |       |
| 陆羽        | ..... | (151) |       |

|            |       |
|------------|-------|
| 释怀素与颜真卿论草书 | (三八三) |
| 韩方明        | (三八五) |
| 授笔要说       | (三八五) |
| 林蕴         | (三八九) |
| 拨镫序        | (三八九) |
| 韩愈         | (三九一) |
| 送高闲上人序     | (三九二) |
| 卢携         | (三九三) |
| 临池诀        | (三九三) |
| 释亚栖        | (三九七) |
| 论书         | (三九七) |
| 李煜         | (三九九) |
| 书述         | (三九九) |
| 韦续         | (三〇一) |
| 五十六种书并序    | (三〇一) |

---

|      |       |
|------|-------|
| 欧阳修  | (三〇七) |
| 试笔   | (三〇七) |
| 苏轼   | (三一三) |
| 论书   | (三一三) |
| 朱长文  | (三一七) |
| 续书断  | (三一七) |
| 黄庭坚  | (三五三) |
| 米芾   | (三五九) |
| 海岳名言 | (三六〇) |
| 赵构   | (三六五) |
| 翰墨志  | (三六五) |
| 陈槱   | (三七三) |
| 负暄野录 | (三七三) |
| 姜夔   | (三八三) |

|          |          |       |
|----------|----------|-------|
| 陈思       | 续书谱      | (三八三) |
| 秦汉魏四朝用笔法 | 秦汉魏四朝用笔法 | (三九七) |
| 郑杓       | 郑杓       | (四〇一) |
| 衍极       | 衍极       | (四〇二) |
| 刘有定      | 刘有定      | (四〇一) |
| 《衍极》注    | 《衍极》注    | (四〇二) |
| 陈绎曾      | 陈绎曾      | (四七九) |
| 翰林要诀     | 翰林要诀     | (四七九) |
| 解缙       | 解缙       | (四九五) |
| 春雨杂述     | 春雨杂述     | (四五五) |
| 丰坊       | 丰坊       | (五〇三) |
| 项穆       | 项穆       | (五一)  |
| 书法雅言     | 书法雅言     | (五二)  |
| 钱泳       | 钱泳       | (五三)  |
| 董其昌      | 董其昌      | (五三九) |
| 画禅室随笔    | 画禅室随笔    | (五三九) |
| 冯班       | 冯班       | (五四九) |
| 笪重光      | 笪重光      | (五五九) |
| 宋曹       | 宋曹       | (五六三) |
| 书法约言     | 书法约言     | (五六三) |
| 梁巘       | 梁巘       | (五七三) |
| 吴德旋      | 吴德旋      | (五七三) |
| 评书帖      | 评书帖      | (五七三) |
| 初月楼论书随笔  | 初月楼论书随笔  | (五八九) |
| 朱履贞      | 朱履贞      | (五九九) |
| 书学捷要     | 书学捷要     | (五九九) |

|       |       |
|-------|-------|
| 书学    | (六二五) |
| 阮元    | (六三九) |
| 南北书派论 | (六三九) |
| 北碑南帖论 | (六三五) |
| 包世臣   | (六三九) |
| 艺舟双楫  | (六四〇) |
| 刘熙载   | (六四一) |
| 艺概    | (六四二) |
| 周星莲   | (七一七) |
| 临池管见  | (七一七) |

|             |       |
|-------------|-------|
| 朱和羹         | (七三一) |
| 临池心解        | (七三一) |
| 康有为         | (七四七) |
| 广艺舟双楫       | (七四八) |
| 佚名三篇        |       |
| 宣和书谱·叙论     | (八六九) |
| 永字八法        | (八七五) |
| 翰林密论二十四条用笔法 | (八八三) |
| 附录          |       |
| 人名索引        | (一)   |

# 赵壹

赵壹，东汉光和间辞赋家。字元叔，汉阳西县（今甘肃天水南）人，灵帝时为上计吏入京。所作《刺世疾邪赋》，表现了对当时奸邪当道、政治黑暗的不平。原有集，已失传。

《非草书》一篇，专抨击草书。其时草书渐行，赵壹欲仍返于苍颉、史籀，此事势所不许。故其文虽传，其说终不能行。《法书要录》、《书苑菁华》等俱载此文。

## 非草书

余郡士有梁孔达、姜孟颖者，皆当世之彦哲也，然慕张生之草书过于希孔、颜焉。孔达写书以示孟颖，皆口诵其文，手楷其篇，无怠倦焉。于是后学之徒竞慕二贤，守令作篇，人撰一卷，以为秘玩。余惧其背经而趋俗，此非所以弘道兴世也，又想罗、赵之所见嗤沮，故为说草书本末，以慰罗、赵，息梁、姜焉。

窃览有道张君所与朱使君书，称正气可以消邪，人无其畔，妖不自作，诚可谓信道抱真，知命乐天者也。若夫褒杜、崔，沮罗、赵，欣欣有自臧之意者，无乃近于矜技，贱彼贵我哉！夫草书之兴也，其于近古乎？上非天象所垂，下非河洛所吐，中非圣人所造。盖秦之末，刑峻网密，官书烦冗，战攻并作，军书交驰，羽檄纷飞，故为隶草，趋急速耳，示简易之指，非圣人之业也。但贵删难省烦，损复为单，务取易为易知，非常仪也。故其赞曰：「临事从宜」。而今之学草书者，不思其简易之旨，直以为杜、崔之法，龟龙所见也。其搔扶拄拄，诘屈发乙，不可失也。龀齿以上，苟任涉学，皆废仓颉、史籀，竟以杜、崔为楷，私书相与，庶独就书，云适迫遽，故不及草。草本易而速，今反难而迟，失指多矣。凡人各殊气血，异筋骨。心有疏密，手有巧拙。书之好丑，在心与手，可强为哉？若人颜有美恶，岂可学以相若耶？昔西施心疹，捧胸而颦，众愚效之，只增其丑；赵女善舞，行步媚蛊，学者弗获，失节匍匐。夫杜、崔、张子，皆有超俗绝世之才，博学余暇，游手于斯，后世慕焉。专用为务，钻坚仰高，忘其疲劳，夕惕不息，仄不暇食。十日一笔，月数丸墨。领袖如皂，唇齿常黑。虽处众座，不遑谈戏，展指画地，以草刿壁，臂穿皮刮，指爪摧折，见膾出血，犹不休辍。然其为字，无益于工拙，亦如效颦者之增丑，学步者之失节也。且草书之人，盖伎艺之细者耳。乡邑不以此较能，朝廷不以此科吏，博士不以此讲试，四科不以此求备，征聘不问此意，考绩不课此字。

善既不达于政，而拙无损于治，推斯言之，岂不细哉？夫务内者必阙外，志小者必忽大。俯而扪蠡，不暇见天。天地至大而不见者，方锐精于虮蠡，乃不暇焉。

第以此篇研思锐精，岂若用之于彼圣经，稽曆协律，推步期程，探赜钩深，幽赞神明。览天地之心，推圣人之情。析疑论之中，理俗儒之诤。依正道于邪说，儕《雅》乐于《郑声》，兴至德之和睦，宏大伦之玄清。穷可以守身遗名，达可以尊主致平，以兹命世，永鉴后生，不以渊乎？